VIRAT PAT

अक्षर ब्रम के चार चतुष्पाद

श्री राज जी महाराज ने अपने सत स्वरुप अक्षर ब्रम पर फरामोशी का जब पर्दा डाला तो वो किस प्रकार से ध्यान अवस्था में बैठे और उनके मन के द्वारा किस प्रकार ब्रमांङ का संचालन चला तो सबसे पहले ये परमधाम

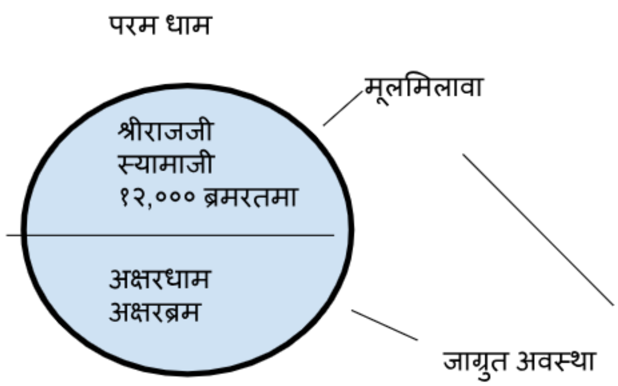

परमधाम के बीच में यमुना जी और यमुना जी के उस पार मूल मिलावा और इस तरफ अक्षर धाम, तो मूल मिलावे में श्रीराज जी, श्यामा जी, और 12,000 ब्रह्ममात्मा,

और यमुना जी के इस पार अक्षर धाम में अक्षर ब्रम अपनी जाग्रुत की अवस्था में है , अब जब श्री राज जी ने अक्षर ब्रम के ऊपर फरामोशी का पर्दा ङाला तो अक्षर ब्रम ध्यान अवस्था में हुए तो उनके अंत:करण के अंदर ही सारी घटना घटी वह अंत:करण क्या है?

1, प्रस्न: उनके चार अंत:करण क्या है ?

जवाब: **मन, चित ,बुद्धि** और **अहम** कहा जाता है,

प्रस्न: शास्त्रो में इसे क्या कहा जाता है ?

सत स्वरूप ब्रम, केवल ब्रहम, सबलिक ब्रम , अव्याक्रुतब्रम कहा जाता है,

2, प्रस्न: जब अक्षर धाम में अक्षर ब्रम ध्यान अवस्था में बैठे तो
उन्होंने अपने आप को एक अलग ही ब्रहमांड में एक अलग ही स्वरूप के रूप में पाया , तो वो स्थान क्या है?

जवाब: क्षर का ब्रहमांड,

ये परे का वो स्थान बना क्योंकि सपने में अपने को ऎक अलग ही स्थान पर पाया।
उसको कहते है, **क्षर का ब्रहमांड**

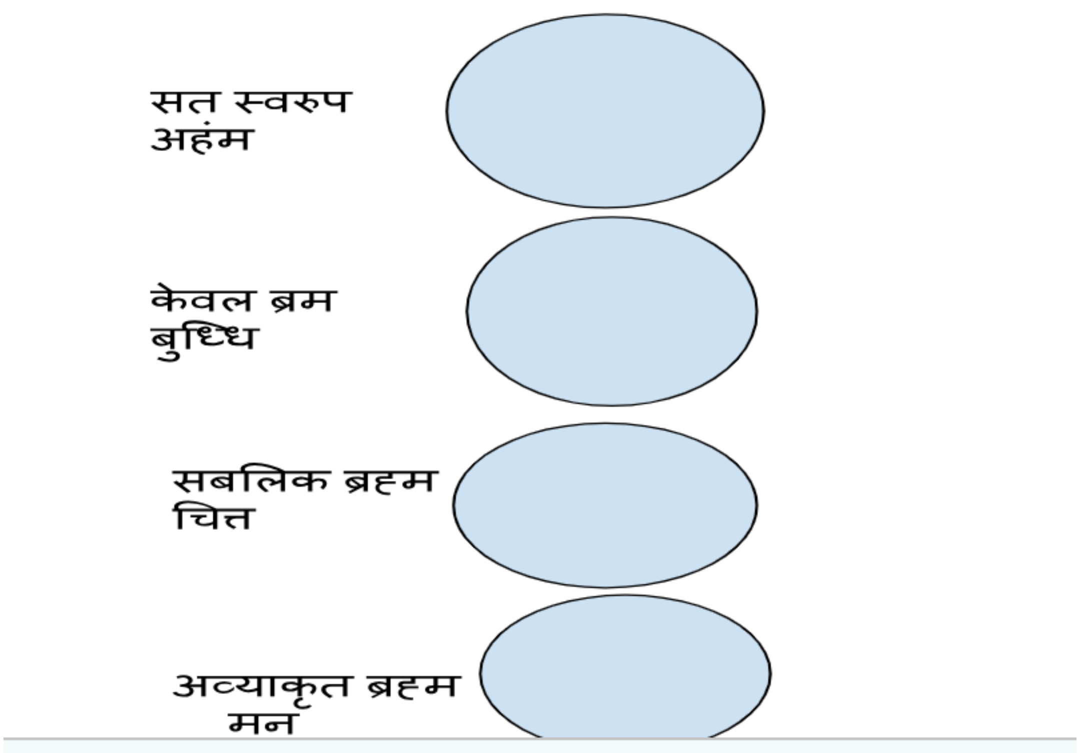

अब सबसे पहले सत स्वरूप ब्रहम ,केवल ब्रहम, सबलिक ब्रहम और अव्याकृत ब्रहम को जानने का एक मूल सूत्र है कि किसको किस नाम से कहा जाता है

3,प्रस्न : शास्त्रों में लिखा है सत स्वरुप ब्रह्म को अंत:करण की भाषा में क्या कहा गया है ?,

जवाब : **अहंम का स्वरुप**

और चार शरीर के नाम, चार शास्त्रों के नाम ,चार अंत:करण के नाम,

पहला है सूत्र सत स्वरुप ब्रह्म

शास्त्रों में	**अंत:सकरण**	**शरीर**
सत स्वरुप ब्रह्म	अहंम	निर्मल चित्त महाकारण
केवल ब्रह्म	बुध्धि	कारण
सबलिक ब्रह्म	चित्त	सुक्ष्म
अव्याकृत ब्रह्म	मन	स्थूल

1 , शास्त्रों में **सत स्वरूप ब्रह्म** ,अंत:करण में **अहंम**, शरीर और स्थान में **महाकरण,**

2, शास्त्रो में **केवल ब्रह्म** अंत:करण में **बुद्धि** शरीर और स्थान में **कारण,**

3, शासत्रो में **सबलिक ब्रम** अंत:करण में **चित** शरीर और स्थान में **सूक्ष्म**

चौथा पाद **अव्याकृत ब्रहम** और अंत:करण में **मन** शरीर में **स्थुल**

सबसे पहले सत स्वरूप ब्रम ये क्या है ?

सत स्वरुप

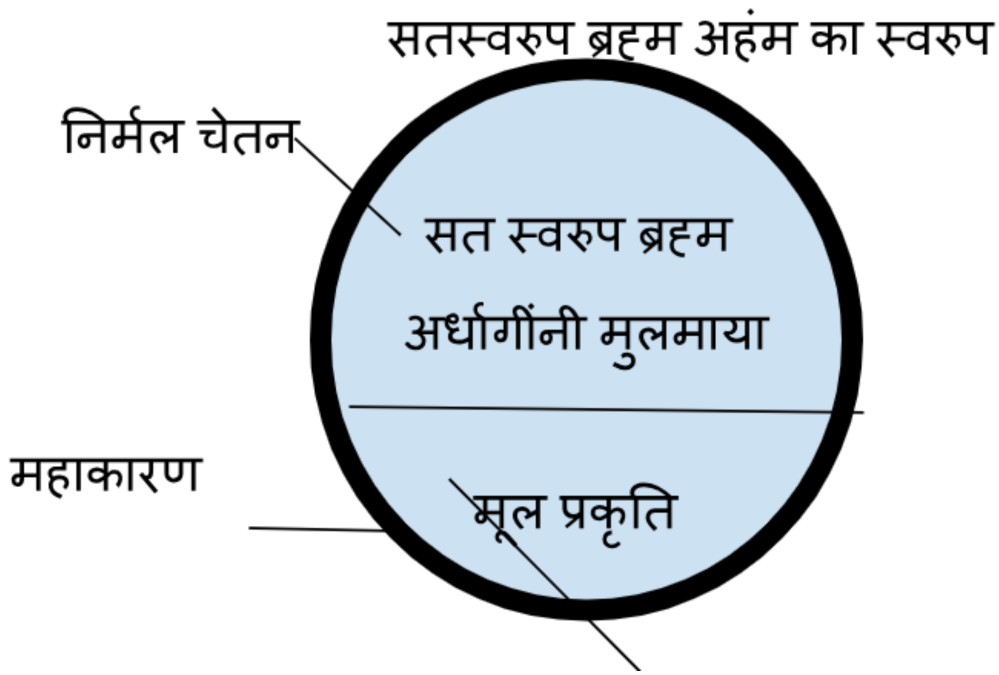

३,प्रस्न : सत स्वरुप के पहले भाग में क्या आया? **जवाब: निर्मल चेतन,**

१, निर्मल चेतन और **२, महा कारण** अब

4,प्रस्न: र्निमल चेतन स्थान में कौन सी शक्ति आकर विराजमान हुई ? और उसका नाम क्या है?

जवाब: स्वत स्वरूप ब्रम और उनकी जो **अर्धांगिनी शक्ति** है वो है

मूल माया ,

सत स्वरूप ब्रम + मूल माया उनके विराजमान का स्थान है, मूल माया और मूल प्रकृति में क्या डिफरेंस होता है ?

जैसे मूल प्रकृति, तो जब हमको आदि नारायण के स्वरूप को जानना है, तो आदि नारायण को इच्छा हुई की सृष्टि में एक हु अनेक हो जाऊ तो आदि नारायण के लिए उनकी मूल प्रकृति क्या है?

उनकी खुद की **इच्छा शक्ति** है,

जैसे मैं और मेरी इच्छा शक्ति.

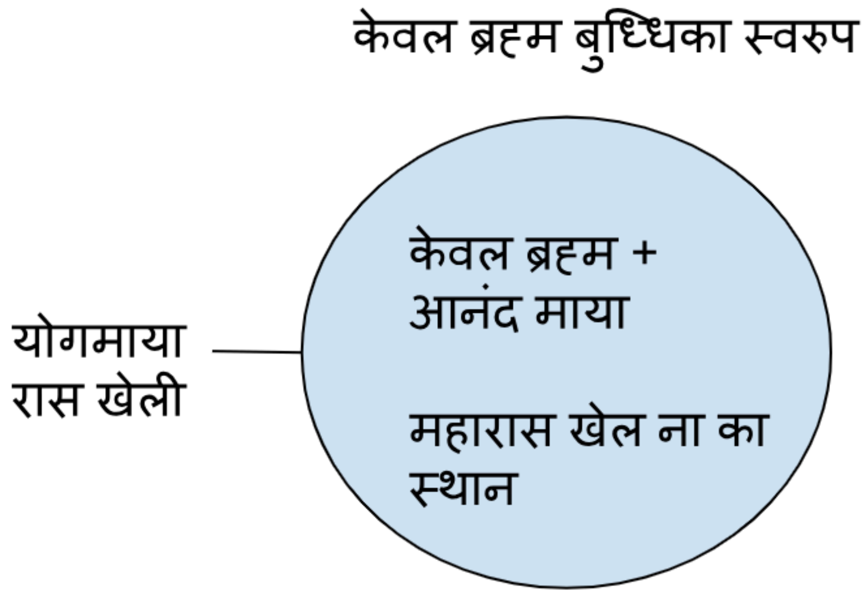

है?

यहां पर हमारी क्या लिला हुई ?

महारास खेली महारास के खेलने का स्थान **केवल ब्रह्म ,**एक यहां पर कोई विभाजन नहीं है, क्योंकि ये आनंद का स्थान है, जहां पर आनंद का स्थान होता है ,वहां पर कोई विभाजन नहीं होता, जिस प्रकार परमधाम में सिर्फ केवल आनंद ही आनंद है, वहा कम ज्यादा घट बढ का कोई नाप - तोल नहीं है ,उसी प्रकार केवल ब्रम में केवल धाम के अंदर भी कोई विभाजन नहीं है, जिस प्रकार सूत्र में दो स्थानों का विभाजन है,

यहा कोई विभाजन नहीं है, केवल में अेक स्थान है यहा पे तो हमारी रास क्या हुई ?
(सेफ) हुई ,जिसे हम **अखंड** कहते है,

अब अक्षर ब्रम का तीसरा पाद है

सबलिक ब्रम

सबलिक ब्रम यानी **चित का स्वरूप,** रास खेली गई केवल ब्रह्म में लेकीन अखंड सबलिक ब्रह्म में कीया है,

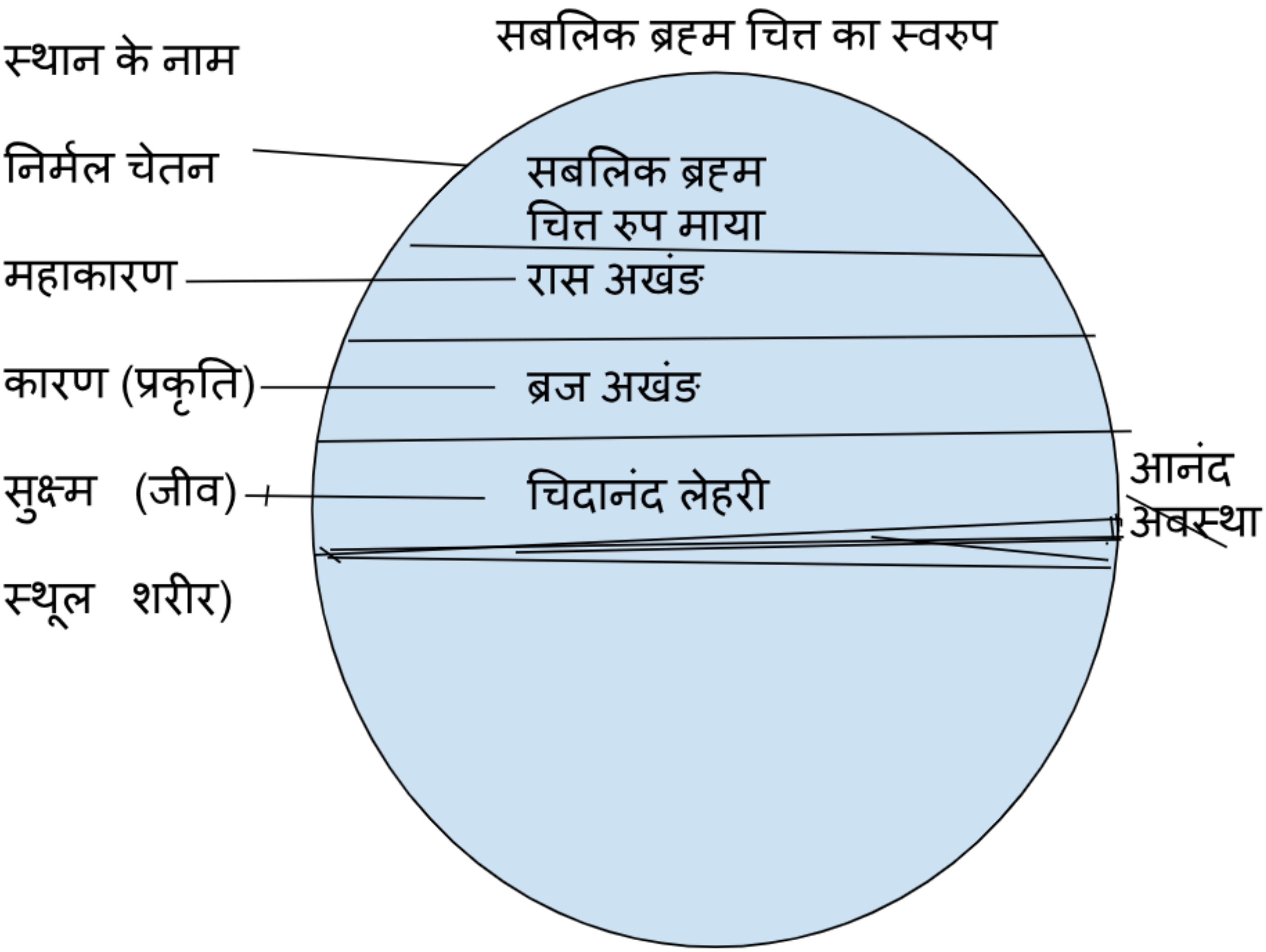

सबलिक ब्रहम को अंत:करण के भाषा में क्या कहा गया ?

चित्त का स्वरूप ,

सबलिक ब्रह्म के पहेला स्थान है?

1,**निर्मल चेतन**,

निर्मल चेतन में **स्वयं सबलिक ब्रम** आए सबलिक + उनकी जो अर्धांगिनी शक्ति है वो है

चित्त रूप माया

सबलिक ब्रम के दूसरा स्थान है

2,**महा कारण ,**महा कारण में क्या आया रास को **अखंङ** किया गया जो लीला केवल ब्रम में जो आनंद की लीला जो रास केवल ब्रहम में खेली गई उसे अक्षर ब्रम ने कहा पर (सेव) अखंङ किया ?

सबलिक ब्रम के महाकारण में अखंङ कर लिया उसको अपने अंदर स्टोर कर लिया, इतनी सुंदर लीला श्री राजजी महाराज ने ना आज से पहले कभी दिखाई थी ना इसके बाद कभी होगी तो उन्होंने इस लीला को बार- बार अपने अंदर देखते रहते हैं,

परमधाम के अंदर जो प्रेम इश्क की लीला जो श्री राजजी महाराज ने अक्षर ब्रह्म को पर्दे में दिखाई थी, वो लीला को उन्होंने **सबलिक ब्रम** के महाकारण में अखंड कीया,

सबलिक ब्रम का तीसरा स्थान क्या है?

3,कारण ,कारण में अक्षर ब्रम ने ब्रिज लीला को (सेव) अखंङ कर लिया, नीचे जो क्षर ब्रह्मांड में जितनी भी ब्रज की लीला थी , वो सारी लीला को यहां पर अपने कारण अंत:करण में (सेव) अखंङ कीया,

4 **सुक्ष्म** सूक्ष्म में कौन है? **चिदानंद लहरी**

चिदानंदलहरी अब जो सबलिक ब्रम का सूक्ष्म स्थान

5 स्थूल , जो अव्या कृत के महा कारण को सबलिक का स्थूल मानते हैं क्योंकि जो लीला सबलिक के स्थूल में होती है वही लीला अव्याकृत के महा कारण में होती है,

जीस प्रकार परम धाम में श्री राज जी महाराज के दर्शन के लिए अक्षर धाम से अक्षर ब्रम यमुना जी को पार करके चांदनी चौक में श्री राज जी को प्रणाम करने के लिए जाते हैं,

दो धाम है केवल धाम और नीचे सबलिक धाम तो सबलिक धाम से यमुना जी को पार करके केवल धाम में प्रणाम करने के लिए सबलिक ब्रम जाते हैं, ऐसा बताया हे

प्रस्न : कारण किसको कहते हैं महा कारण स्थूल सूक्ष्म

क्या होता है ?

जैसे हमारे अंदर भी सूक्ष्म होता है स्थूल होता है अब जैसे हमारा शरीर **पांच तत्व से बना है ,जल ,वायु, पृथ्वी ,अग्नि, आकाश** और इसके अंदर भी पांच ज्ञान इंद्रिया, पांच कर्म इंद्रिया ,होती है इन सब से मिलकर हमारा स्थूल शरीर बनता है ,उसी प्रकार इसके अंदर भी अक्षर ब्रम के चार चतुष्पाद

जैसे चार भाग होते हैं चार पाद है तो एक में जैसे सबलिक ब्रह्म में चार जो है निर्मल चेतन, महा कारण,कारण, सूक्ष्म इनका सब में अलग अलग रोल है ,

हमारे माइंड को कोई मैसेज देना है तो वो कैसे जाएगा मान लो कि जैसे मेरे हाथ पर किसी मच्छर ने काटा तो मच्छर ने तो काटा वो अभी मुझे दिख रहा हे की मच्छर ने काटा तुरंत एकदम से उसको टैप कर दिया लेकिन सूक्ष्म रूप में अगर देखा जाए तो ये अंदर की प्रक्रिया में इतना फास्ट होता है कि जैसे अब ये मैसेज हाथ से कहां गया माइंड को माइंड ने क्या किया मैसेज पहोंचाया हमारी नस को की

मच्छर को मारो तो मैंने हिट किया तो मच्छर उड़ गया इसी तरीके से सूक्ष्म रूप के अंदर जो क्रिया होती,

असल में तो ये जो कुछ भी नहीं ये जितने भी पाद है, जितने भी सब मन चित बुध्धि अहंम ये कहां है ये अक्षर ब्रह्म के हृदय के अंदर ही है ,शरीर के अंदर उसी प्रकार हमारे अंदर भी ये मन चित्त बुद्धि अहम कहां है, मेरी बुद्धि कहां है मेरे अंदर ही है मेरी बुद्धि मेरे शरीर के अंदर मेरा मन कहां है मेरे अंदर ही है मेरा चित कहां है। मेरा चित कहां लग रहा है,? हम बोलते, की हमारा चित नहीं लग रहा , हमारा ध्यान नहीं लगता, हम ध्यान में बैठते है तो चित नहीं लगता, तो वो कहां है हमारे अंदर ही तो है, हमारे से तो बाहर नहीं है ,

दिखने में ये बाहर स्थान बताए गए लेकिन सुक्ष्म रूप में तो हमारे अंदर ही है,ये अंदर का मन चित बुद्धि अहंकार को ही महा कारण,कारण ,सूक्ष्म और स्थूल चारों को

जब दर्सन की बात आती है तो सभी को होता है की में वो आनंद लूं तो वो उसको प्रणाम के भाव से ले लिया है कि वो एक ब्रह्म बना दिया मतलब मेरे मन का एक स्वरूप बन गया जिसका नाम रख दिया **अव्या कृत ब्रह्म** अब वो जो मन है वो भी चाह रहा है कि मैं चित्त का आनंद लूं चित्त चाह रहा है तो मैं बुद्धि का आनंद लू, बुद्धि चाह रही है मैं अहंम का आनंद लू तो वो ऐसे ही है एक के ऊपर एक स्टेप ऊपर हो जाता है,

जो केवल धाम है वो परम धाम का प्रतिबिंब है,

जिस प्रकार से परम धाम का प्रतिबिंब केवल धाम को कहा गया आनंद को दिखाने के लिए पर्दे में श्री राज जी ने रास दिखाया

और अक्षर ब्रम ने क्या मांगा था ?

अक्षरातीत के महल में, प्रेम इसक बरताय ।

सो सुध अक्षर को नहीं, किन विध केली करत।।

तो अक्षर ब्रमे वो सुंदर लीला देखने की इच्छा अपने हृदय में प्रकट करी तो श्रीराज जी ने वो सुंदर लीला अक्षर ब्रम को पर्दे में दिखाने के लिए क्योंकि डायरेक्ट परमधाम की लीला वो दिखा नहीं सकते, अपनी ब्रम प्रिया को डायरेक्ट नहीं दिखा सकते तो उन्होंने वह प्रतिबिंब योग माया को आदेश दिया कि सुंदर ब्रह्मांड बनाओ,

जिसमे ये लीला अक्षर ब्रम खेले भी अनुभव भी करे जब वो स्वयं खेलते भी है और उस को जब वो अनुभव भी करते हैं तो वो अपने चित में उसको अखंड कर लेते ,

प्रस्न: यमुना जी तो अंतःकरण के है ? तो फिर यमुना जी किस
चीज का रूप है? यमुना जी को पार करके सबलीक ब्रम केवल ब्रम के दर्शन के लिए जाते है तो वो किस चीज का स्वरूप है ?

अंत: करण के सारे भाग है ,

अंत:करण में ए बात एक उदाहरण से समझते हैं,

आप रात को जब सोते हैं ठीक है आप सो गए और आपको गहन निंद्रा आ गई जब आप बहुत अच्छी नींद में पहुंच गए साउंड स्लीप में पहुंच गए तब आपने क्या किया सपने में आपने मान लीजिए मैं अपने आपको कहां देख रही हूं कि मैं कश्मिर पहुंच गई और वहां पहुंच कर मैं कश्मिर में घूम रही हूं वहा बहुत अच्छी अच्छी चीजों को देख रही हूं पहाड़ देख रही हूं और वहां पर मैं शॉपिंग कर रही हूं घूम रही हूं,

तो ये ब्रह्मांड कहां बना मेरे सपने में बना ब्रह्मांड ,और जैसे ही मेरी नींद खुलती है तो वो ब्रह्मांड कहां गया? सपने में तो मैंने पहाङ भी देखा था सपने में तो मैंने वहां पर अच्छा खाया भी था अच्छा अच्छा घूमा भी था पर जब मेरी नींद टूटी तो मैं कहां थी मैं अपने जागृत के स्वरूप में ही थी,

वहां में कहां घूम रही थी और पहाड़ भी देख रही थी तो यह पहाड़ का अस्तित्व था, नहीं था उसी तरह से उनके मन का ही स्वरूप है यमुना जी, क्योंकि वैसे वाणी मे

कहा गया है ,कि जिस प्रकार **आकाश मे फूल नहीं हो सकता, बांज को पुत्र नहीं हो सकता** उस प्रकार यह ब्रह्मांड है ही नहीं, यह तो सपना है किसका सपना है **अक्षर ब्रम का सपना** है, जो घटित हो रहा है, ब्रहमांड के रूप में लेकिन असल में क्या ये ब्रहमांड है? ये ब्रह्मांड तो नाशवान मिटने वाला है,

तो अखंड क्या है?

एक मात्र परमधाम और अक्षरधाम

ये सब तो अक्षर ब्रह्म के अंत:स्करण में घटित हो रहा है, मन में घटित हो रहा है **,**

ये जो तन अपना है उसको स्थूल बोला गया ,अंदर जीव है उसको सूक्ष्म बोला गया ,कारण लीला है ,महा कारण जहां से लीला शुरू हुई

जैसे ब्रजलीला के बाद यह ब्रह्मांड नष्ट कर दिया गया था ,प्रलय कर दिया गया था, ब्रजलीला में जितने भी कृष्ण के संपर्क में रहने वाले जीव उनको कारण प्रकृति में रखा गया था,

सूक्ष्म क्या होता है?

स्थूल क्या होता है ?

कारण क्या होता है ?

और महा काण क्या होता है?

हमने जो ये चार शरीर चार स्थानों का वर्णन किया जिसमे हमने जाना **सूक्ष्म कारण**, **महाकारण** और उसके ऊपर **निर्मल चेतन,** स्थूल, सक्षम ,कारण महाकारण ये किसी भी स्थान पर एक जगह से दूसरी जगह पर डायरेक्ट नहीं जाया जा सकता, जैसे महाकारण से कारण में डायरेक्ट नहीं जाया जा सकता कारण से सूक्ष्म में डायरेक्ट नहीं जाया जा सकता सूक्ष्म से स्थूल में नहीं जाया जा सकता उसके लिए क्या है ? प्रक्रिया है उसको कैसे फॉलो करेंगे ,

जैसे महा कारण का कारण ,महा कारण का सूक्ष्म, महाकारण का अब इस कारण में आने के लिए तब जाकर हम महा कारण के कारण में आएंगे अब जैसे कारण अब कारण का भी महा कारण है कारण का भी कारण है, कारण का भी सूक्ष्म है कारण का भी स्थूल है उसी प्रकार सूक्ष्म का भी महा कारण है सूक्ष्म का भी कारण है सूक्ष्म का भी स्थूल है सेम वे स्थूल का भी महा कारण है भी कारण है स्थूल का भी सूक्ष्म है

स्थूल का भी स्थूल है, आगे जब शक्ति ट्रांसफर होगी ना वो किस रूप में होगी वो उस पॉइंट पर ये समझने में हमें इजी होगा जैसे ये

चिदानंद लहरी शक्ति आगे जाकर अव्या कृत ब्रम में सुमंगला नाम से कैसे आएंगी

तो शक्ति ट्रांसफर कैसे हो रही है ,वो एक के अंदर एक सूक्ष्म रूप से आ रही है , सूक्ष्म रूप में जिस प्रकार ब्रेन में जो वो मैसेज पहोंचा की मच्छर ने काटा तो ब्रेन को तुरंत क्लिक कैसे किया हमें ऐसा लग रहा है कि सीधा बे्न ने उसको कहा लेकिन अंदर हमारी कितनी सुक्षम नाड़ि और ब्रेन के थ्रू ये वापस मैसेज कहा आया इस हाथ के पास तब इस तरीके से ये अंदर की और सूक्ष्म रूप में लीला वर्क करती है,

चोथा कौन सा स्थान है?

अव्याकृत ब्रम यानी की अक्षर का मन स्वरूप

और इस से पूरी सृष्टि का जो मन से ही पूरा जो सृष्टि का चलन चलता है, वो यही से चलता है ,तो ये हम मान सकते हे की ये एक हमारा आधार है मूल है , सृष्टि को समझना बहुत इंपोर्टेंट है ,

अव्याक्रृत ब्रम को क्या कहा गया? **मन**

मन अव्याकृत ब्रह्म यानी मन के अंदर भी स्थान आया

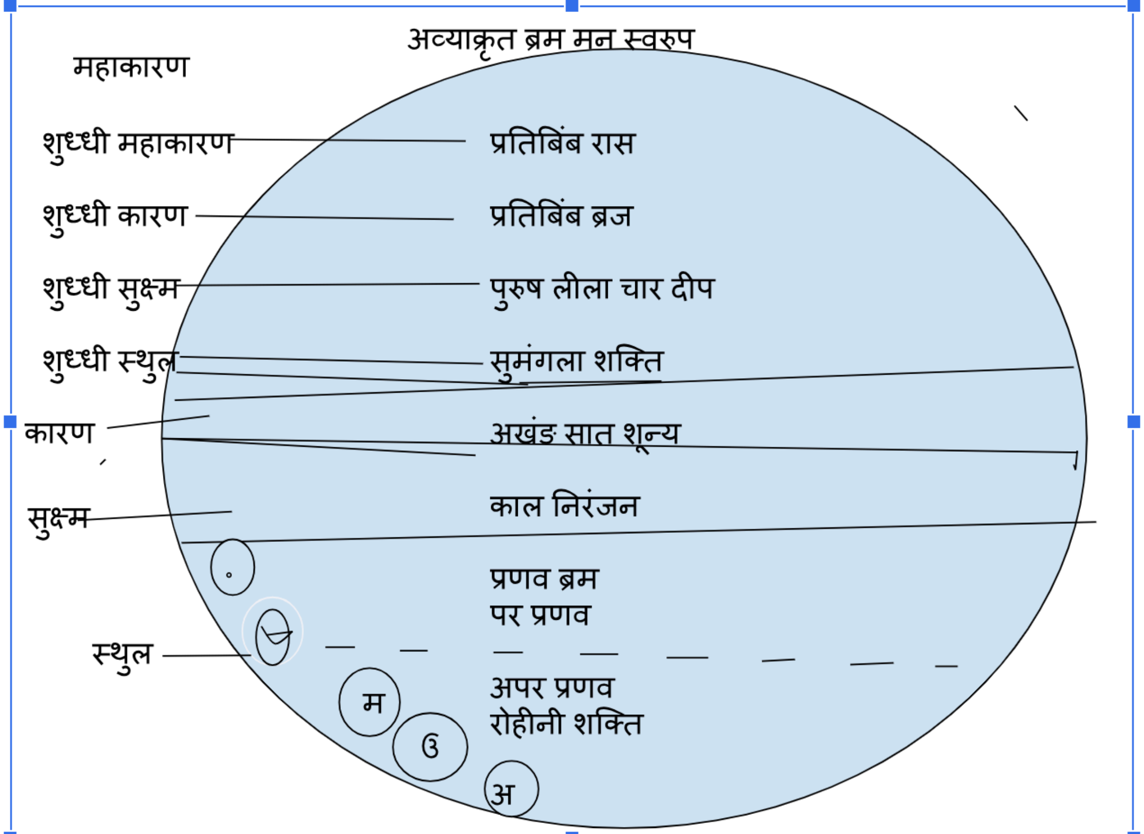

महा कारण यहां पर आया महा कारण जब भी किसी भी स्थान के अंदर की बात हो उसके अंदर भी चार स्थान हो जैसे स्थूल, सुक्ष्म, कारण ,महा कारण होंगे तो उसको समझने के लिए उसके आगे शब्द क्या लगेगा शुद्ध महा कारण ,शुद्ध कारण, शुद्ध सूक्ष्म, शुद्ध स्थूल,

शुद्ध महा कारण में क्या आया ?

प्रतिबिंब की रास , क्योंकि सबलिक के महा कारण में जो रास अखंङ हुई वो सूक्ष्म रूप में महा कारण मे आई इसका प्रतिबिंब अव्याकृत के महा कारण के भी पङा

1 शुद्ध महा कारण में क्या आया ,

प्रतिबिंब रास

2 शुद्ध कारण में क्या आया

प्रतिबिंब ब्रज

कहा से आया सबलिक ब्रम में जो कारण में अखंङ हुआ था, उसका प्रतिबिंब कहा आया?

अव्याकृत ब्रम यानी मन के महाकारण के शुद्ध कारण में है

अब महा कारण का तीसरा खंड जो आएगा

प्रतिबिंब ब्रिज हुई ,उसी का रिफ्लेक्शन है यहां आहा है ,

उसको रिफ्लेक्शन को कैसे समझेंगे रिफलेक्शन यह क्यों पड़ा?

मन के अंदर यह प्रतिबिंब रास ,मतलब रास का प्रतिबिंब यह प्रतिबिंब क्यों पङा?

क्योंकि अभी जो ये हमारे जो जिस ब्रह्मांड में हम रहते हैं ,जिस मथुरा और यहां की वृंदावन की बात हुई है , यहां के जो ब्रह्मांड के जो लोग है वो सोचते हैं यही ब्रज मथुरा और वृंदावन में जो रास हो रही है, वो अखंड है लेकिन असल में जो रास हो रही है वो कहा हो रही है, **केवल धाम** में **केवल ब्रम** के योगमाया पर हो रही है,

तारतम के माध्यम से श्री राज जी की मेहर से यहां पर पता चल गया कि अखंड रास तो यहां हो रही है ,लेकिन जो वेद और जो बाकी शास्त्रों में जो प्रमाण के द्वारा जो उन्होने मान लीया , हमें पता है कि यहां पर अखंड है लेकिन वो इस प्रतिबिंब स्वरूप को ही अखंड मानते हे,

उसका भी जब प्रतिबिंब नारायणी सृष्टि पर पड़ेगा तो प्रतिबिंब का भी प्रतिबिंब है लेकिन असल में तो योगमाया के ब्रमांङ में है , यहा पर जो आज जो ये सारा ब्रह्मांड भ्रमित है, जिसे ये नहीं पता कि हम कहां से आए हैं? हमारी मुक्ति का स्थान कहा है? तो अब इसके थ्रू (विराट) जान सकेगे की परमधाम में आनंद की लीला की,

उसको श्री राज जी ने यहां पर पर्दे पर केवल ब्रम में रास हुई और उसका प्रतिबिंब अखंङ किया **सबलिक ब्रम में,**

और सबलिक ब्रम में जब ये अखंङ किया तो उसका प्रतिबिंब **अव्याकृत ब्रम में** पड़ा।

और उस का भी उल्टा प्रतिबिंब जब **नारायणी सृष्टि** पर पड़ा तो नारायणी सृष्टि में आज तक जो वेद वेदांत होते हैं वो क्या बोलते है? जो रास खेली गई वो इसी ब्रह्मांड में इस काल के **ब्रह्मांड में**

अक्षर ब्रम के भी मन का स्वरूप अव्याकृत और अव्याकृत के भी मन का स्वरूप जो है उनसे सृष्टि का निर्माण हुआ तो वो हे **आदि नारायण**

अव्याकृत के मन का स्वरूप **भगवान आदि नारायण** और आदि नारायण के भी मन का स्वरूप जो 14 लों में जो सबसे नीचे का पाताल लोक में वहां पे शेष भगवान **शेषाई नारायण** वो उन के भी मन के स्वरूप से उनकी नाभी कमल से तीन गुणों की उत्पत्ति हुई **ब्रह्मा ,विष्णु ,महेश** सबके मन के स्वरूप है ,तो वो जब सबके मन के अंदर घटित हो रहा है वो ब्रह्मांड है ही नहीं, तो कहां है वो स्वर्ग?
कहां है वो वैकुंठ ? कहां है वो जहां पर हम को मुक्ति मिली? क्योंकि वो तो महाप्रलय में सब विलीन हो जाएगा तो क्या रह जाएगा ? एक मात्र परमधाम ही रह जाएगा जहां पर हम सब सुंदर साथ को अखंड मुक्ति मिलेगी,

अब महा कारण का तीसरा खंड जो आएगा

3 **शुद्ध सूक्ष्म**

शुद्ध सूक्ष्म में क्या आया?

पुरुष लीला चार द्वीप

पुरुष लीला चार द्वीप कहा आई ?
अव्याकृत के महाकारण के शुद्ध सुक्ष्म में पुरुष लीला चार द्विप आये चार द्विप पुरुष लीला जब चिदानंद लेहरी और सुमंगला शक्ति प्रकृति में प्रवृत होती है, तो अक्षर ब्रम पर जो निंद्रा का जो मेन असर पड़ता है वो कौन सी वृत्ति पर पड़ता है ? जिससे उनको भ्रमित करके निंद्रा आती है ,वो पुरुष लीला वाली व्यक्ति को सुमंगला शक्ति असर

डालती है तब जाके अक्षर ब्रम भ्रमित होते हैं, और वो नींद में सृष्टि रचना का जो वो सपना देखते हैं, वो वर्क वहा से शुरू होता है ?

4 **शुद्ध स्थूल**

शुद्र स़थूल में क्या है ?

सुमंगला शक्ति

चिदानंद लहरी और जो सुमंगला शक्ति है उनका क्या कार्य क्या है ?

अब यहा पर अव्याकृत ब्रम में जो ये सुमंगला नामक शक्ति है ,और यहां पर सबलिक ब्रम के सुक्षम में चिदानंद लहरी नामक जो शक्ति है इनके बारे में कहते हैं तो ये जो चिदानंद लहरी और जो ये सुमंगला शक्ति है चिदानंद लहरी जो जब जब ब्रह्मांड बनने और जब प्रवृति ब्रह्मांड के बनने का समय आता है , तो चिदानंद लहरी ही ध्यान अवस्था में बैठते हैं तो ये अपने में जब आनंद अवस्था में होते हैं तो ये क्या करते हैं जब ये आनंद की अवस्था में अपने आप को पाते हैं आनंद में मगन होते है,

ध्यान में बैठते है तो वो **ब्रज** और **रास** की लीला का ध्यान करते हैं जब ब्रज और रास की लिला का ध्यान करते हैं तो वो **आनंद** में आनंदमय हो जाते हैं, और जब यही चिदानंद लहरी कार्य सृष्टि के प्रकृति के कार्य में आते हैं, तो यही चिदानंद लहरी सुमंगला नामक शक्ति के रूप में प्रकट होती है, जब यह प्रकृति की सृष्टि रचना में प्रवृत होती है ,तो ये सुमंगला नाम से प्रगत होती है ,

तो यहां पर ये **सुमंगला कब प्रकट होती है** सृष्टि की प्रगति के टाइम में तो ये सुमंगला नाम से हो जाती है और जब ये आनंद में होते हैं, तो ये **चिदानंद लहरी** हो जाते हैं ,इसमें बताया गया एक पलंग के ऊपर चिदानंद लहरी चार पायों के बीच में बैठे हैं ,

उनके साथ **पांच शिव** का वर्णन आया हैं ,और वह अपने ध्यान अवस्था में बैठे हुए हैं ,जिसमें जब वो ध्यान में आनंद में मगन होते हैं तो वो किसका ध्यान कर रहे होते हैं सबलिक में जो रास और ब्रज की लिला को वो अपने आनंद अवस्था में देखते हैं तो आनंदमय हो जाते हैं और जब यही चिदानंद लहरी कार्य प्रवृत्ति में प्रकट होते हैं तो वो सुमंगला नामक शक्ति के रूप में प्रकट होते हैं,

चिदानंद लहरी भी सुमंगला शक्ति के रूप में जगत रचना का कार्य करती हैं , अर्थात सुमंगला शक्ति चिदानंद लहरी का प्रतिनिधि करती है ,
इसको समझ सकते हैं ,

जो चारों पाद अक्षर ब्रम के अंदर ही मन चित बुद्धि अहंकार इसी के अंदर ही बुद्धि में रास खेली गई ,

मान लो एक चीज मेरी बुद्धि में खेली गई वही चीज मेरे चित में अखंड हो गई ,सबलिक ब्रम में अखंड हो गई, वो चीज मेरे चित में मेरे मन में भी आएगी,
जो चीज केवल ब्रह्म में तो खेली बुद्धि में खेली गई चित में उन्होने अखंड कर ली, कि जब मेरा दिल करेगा मैं उसको हर पल देखूंगा और जो चित में हे वो मन में, तो आएगी वो अपने अंदर ही हैं ,

आगे नाम था सुमंगला शक्ति क्योंकि मन से आगे मन सपना देखता है, तभी तो कहते अव्याकृत मन है, अक्षर का और उसने सपना देखा जिसमें आदि नारायण और सारा वह झूठा ब्रहमांड एक सपने में ही बन गया, जिसमे अब हम आए हुए हमारी आत्मा जीवों के पर बैठ के खेल देख रही हे,

वहां पर वैसे तो पहले कुछ नहीं था, मतलब की धीरे धीरे वहा हर चीज अखंड हो जाती है, जो चीज चित में आई वो अखंड हो जाती है, क्योंकि वहा तो सोच भी चेतन वहा हर चीज चेतन है मन भी चेतन है हर चीज चेतन है और जो चीज वो सोचते

हैं वो वहा चीज बन जाती है ,और वो अखंड हो जाती है, अपने चित अंत:करण में अभी भी वहा पर जो लीला रास चल रही है ,वो अभी भी चल रही है ,क्योंकि वो एक बार चीज बन जाती है वो मिटती नही, वो अखंड हो जाती है,

अव्याकृत के महा काण के बाद **दूसरा स्थान क्या आता है?**

कारण , कारण में क्या आया?

अखंड सात शून्य , अखंड सात शून्य ,शून्य महा कारण कारण और सूक्ष्म

अखंड सात शून्य में क्या है ?

यहां पर सात स्वरों की उत्पत्ति होती है ,और अलग अलग रंगों की उत्पत्ति होती है,

तीसरा स्थान क्या आया ?

सूक्ष्म सूक्ष्म में क्या आया?

काल निरंजन शक्ति

यहां पर काल निरंजन बैठे हुए हैं, अव्याकृत के स्थूल में भी दो आए है दो ५,**स्थूल** में अब आता है ,

प्रणव ब्रम ,

अब अव्याकृत यानी मन ,मन में जो स्थूल आया है उसमें

१,पर प्रणव और २,अपर प्रणव, २ भाग में इसको बाटा गया है

अब इस पर प्रणव और अपर प्रणव में भी अंदर का स्थान क्या आता है ?

निर्मल चेतन, महाकरण ,कारण, सुक्ष्म और स्थूल,

प्रणव का मतलब होता है एक शब्द में **ओम** यानी ओम के अंदर का समावेश है पांच शक्तियां,

इस में अब ये **ओम** कैसे बनता है ,ओम में सबसे पहले आता है आकार मात्रा और इसके ऊपर अर्ध मात्रा और उसके ऊपर बिंदु का मात्रा अब जो ये ओम है, पांच आकार ,पांच मात्रा, हो गई, ओम से क्या बना ? अ उ म अर्ध मात्रा और बिंदु तो मिलके बना **ओम** अब इसमें पांच तत्व आते हैं पांच तन मात्रा आते हैं पांच देवता आते हैं और वेद आते हैं ,

बिंदु का मात्रा से आकाश की उत्पत्ति होती है ,
इसमें तन मात्रा शब्द आता है, आकाश के देवता जो है वो सदाशिव है,

इसी प्रकार जो शुद्ध महा काण में अर्ध मात्रा आई है उसमे तत्व है वायु और इसमें जो तन मात्रा आया
है स्पर्श और वायु के जो देवता है वो ईश्वर और इसमें जो वेद आए है व है अथर्व वेद

शुद्ध कारण अब ये निर्मल चेतन का स्थान है निर्मल चेतन के महाकारण ये सूक्ष्म रूप में ये ओम का ये जितनी शक्तियों का समावेश है , उसका सूक्ष्म रूप डालकर वो यहां पर दिखाया गया है , इस तरीके से नक्शे में तो यहां पर क्या?

ॐ के 5 मात्र / 5 आकार

	आकार	तत्व	तनमात्र	देवता	
शुद्ध निर्मल चेतन	.	आकाश	राग	सदा शिव	
शुद्ध महाकारण	(	वायु	स्पर्श	इस्वर	अथवरवेद
शुद्ध काणन	म	अग्नि	रुप	रुद्र	सामवेद
शुद्ध सुष्म	उ	जल	रस	विष्णु	यजुर्वेद
शुद्ध स्थूल	अ	पृथ्वी	गंध	ब्रमा	ऋगवेद

१ **शुद्ध निर्मल चेतन** में क्या आया? बिंदु का मात्रा और इसके अंदर तत्व कौन सा आया ?

आकाश शब्द और सदाशिव ,आकाश के देवता सदाशिव

२ **शुद्ध महा कारण** में अर्ध मात्रा इससे वायु की उत्पत्ति स्पर्श और इनके **देवता ईश्वर** और जो वेद आए है वो है **अथर्व वेद**

३ **शुद्ध कारण** में **म** मात्रा पांच तत्व में **अग्नि** आई है तन मात्रा में
रूप और अग्नि के **देवता रुद्र** है और वेद है यहां **सामवेद**

४ **शुद्ध सूक्ष्म** में **उ** आकार मात्रा पांच तत्व में **जल** है और जल से तन मात्रा क्या आई रस और जल के **देवता भगवान विष्णु** है और यहां वेद है **यजुर्वेद,**

५ **शुद्ध स्थूल** में आकार **अ** तत्व **पृथ्वी** और इनके **देवता ब्रह्मा** और **गंध** की उत्पत्ति हुई और जो वेद **ऋगवेद ,**

यहां पर **प्रणव** का मतलब है पांच शक्तियों का समावेश तो यहां पर किस तरीके से **ओम** की सारी शक्तिया इसमें दिखाई गई है ,

अब इस प्रणव ब्रम में एक और शक्ति आई है **रोदिनी शक्ति**
रोदिनी शक्ति का क्या अर्थ है ? 15 दिन सृष्टि की रचना करती है ,
15 दिन सृष्टि की रचना करती है साकार रूप में जैसे कि उनमें
15 नेत्र का वर्णन करके आया तो 15 नेत्र से मतलब है कि 15 दिन वो अपने नेत्र जब खोलती है जब सूर्य का उदय होता है ,**(नेत्र खोलना)**
और जब सूर्य का अस्त होना होता है **(नेत्र बंद करना**) तो 15 दिन सृष्टि की रचना करती है,

जब सृष्टि की रचना होती है तो वो क्या होता है **साकार रूप** होता है और जब सृष्टि का प्रलय होता है तब क्या होता है वो **निराकार रुप** होता है **साकार रूप** सृष्टि 15 दिन चली और जब सृष्टि का लय हुआ 15 दिन तो वो **निराकार रूप** होता है, और उसके बाद वह अपने मूल में चले जाते हैं जब नेत्र खुलते हैं तो सृष्टि बनती है और जब नेत्र बंद होते हैं तो सृष्टि का प्रलय हो जाता है,

अव्याकृत महा कारण मंडल में जो ये **शुद्ध सूक्ष्म** में जो **पुरुष लीला** है और शुद्ध स्थूल में जो **सुमंगला शक्ति** है तो ये जो पुरुष लीला वाली जो वृत्ति है वो कहां पर आती है वो

ये दोनों शक्तिया सूक्ष्म रूप में नीचे आती है **पर प्रणव** और **अपर प्रणव** में अब जो ये अपर प्रणव में सुमंगला शक्ति और पर प्रणव में जो पुरुष लीला वाली शक्ति है जब वो नीचे आती है तो ये सृष्टि बनती है,

तो उसमें कैसे वो सहयोग करती है। अपर प्रणव वाली शक्ति जो नीचे आई तो उससे क्या हुआ ?

एक मोह तत्व की उत्पत्ति हुई , जब मोहतत्व मतलब क्या? एक निंद्रा जिसमे वो समुद्र के अंदर एक **अंडा** तरता तो क्या वो जल का समुद्र था? जैसे वाणी में चौपाई आती है

मोह अज्ञान भरम ना कर्म काल, सारे नाम नींद के निराकार निरगुन ।

तो ये एक मोह तत्व की उत्पत्ति हुई, मतलब की इसमें एक मोह सागर में एक अंडा तैरता रहा तो वो

मोह सागर की उत्पत्ति कहा से हुई ?

अपर प्रणव वाली वृति से ,एक मोह सागर की उत्पत्ति हुई , जिसमे मोह का सागर बना, जैसे वाणी में नीर सागर ,नूर सागर तो सागर मतलब जहां देखो नूर ही नूर का

प्रकाश ,जहां देखो ही खुशबू का प्रकाश ,उजाले ही उजाले का प्रकाश ,तो कोई उसकी गिनती नहीं है,

उसी प्रकार से एक मोह यानी एक निद्रा की उत्पत्ति जहां देखो मोह ही मोह, जहां देखो नींद ही नींद ,जब नींद होती है तो कुछ समझ ही नहीं होती ,कुछ पता ही नहीं होता कि कौन है? कहां है? किधर है ? मोह यानी की एक भ्रम में खो जाना की ऐसी अवस्था होना जहां पर हम भ्रमित है ,हमें लग रहा है की ऐसा है ।पर ऐसा है नहीं, वो एक भ्रम हे ,वो मोह मतलब एक निंद्रा का उत्पन्न होना,

वो कहां से आया?

अव्याकृत के प्रणव ब्रम की अपर प्रणव ब्रम वाली वृति से मोह रूपी जल का वो उदय हुआ, और उससे पर प्रणव वाली वृति से एक चेतन तत्व का इसके अंदर प्रवेश किया ,

अब ये चेतन तत्व जो है वो **हजार वर्ष** तक इस मोह रूपी जल में **कर्म, काल स्वभाव के कारण मोह सागर में तेरता रहा,** तो हजार वर्ष के बाद ये जो चेतन तत्व अंडे को फोड़कर जब बाहर आया तो वो जैसे ही चेतना ने प्रवेश किया तो ये जो **निर्जीव अंडा था** वो **सजीव हुआ** तो वो सजीव अंडा ने एक पुरुष का रूप लिया, उस पुरुष ने अपने आप को वो मोह से उत्पन्न हुआ है ,उसको पता नहीं है ,वो अज्ञान में उत्पन्न हुआ है, उसको अपने आप की पहचान नहीं कि वो कहां से आया है ?

वो मोह से उत्पन्न हो रहा है उसने अपने आपको हजार वर्ष तक इसमे बिल्कुल अकेला पाया ,जब अकेला पाया उसने आपको तो देखा कि मैं
अकेला हूं यहां पर कुछ है ही नहीं। वो अज्ञान से उत्पन्न हुआ है तो वो कौन सा पुरुष कहलाया ?

क्षर पुरुष ,यही क्षर पुरुष कहां से आया ? मोह से इसकी उत्पत्ति हुई इसने अपने आपको अकेला पाया तो इन्होने क्या कहा?

एकोहम बहुश्याम ।

मैं अेक हूं अनेक हो जाऊ, अपने आप को जब अकेला पाया और अपने आप को जानना चाहा कि मैं कौन हूं?

मैं कहां से आया हूं ? लेकिन इन्होने अपने आसपास जब किसी को नहीं पाया और देखा कि उनकी उत्पत्ति कहां से हुई है? नर यानी कि एक नर की उत्पत्ति हुई ,ये पुरुष शक्ति है तो पुरुष शक्ति क्या है ? नर, नर की कहां से उत्पत्ति हुई?

नार यानी पानी ,पानी में, नार पानी का वर्ड कहा जाता है ,तो कहां से उत्पत्ति हुई पानी से ,यानी कि एक मोह रूपी जल से उनकी उत्पत्ति हुई नर यानी **नर पुरुष**

नार में निवास करने के कारण उन्होंने इस मोह रूपी ही जल को अपना घर बना लीया , अपने आप को अकेला देख के अपने आप को मोह रूपी जल में जब उनको कुछ समझ आया तो उन्होने इस मोह रूपी जल में ही अपना अयन बनाया तो नाम पड़ा इनका **नारायण।**

नारायण में भी इसमें एक वर्ड जुड़ता है ,**आदि नारायण** ।

अब आदि नारायण वर्ड कैसे जुड़ा जो आदि का मतलब होता है सबसे पहले का मतलब जो प्रथम आदि, मतलब सबसे पहले का पुरुष होने की वजह से इनका नाम पड़ा

आदि नरायण

अब आदि नारायण ने अपने आप को अकेला देखा और क्या इच्छा करी **मैं एक हूं और अनेक हो जाऊ** ,

जब तक आदि नारायण अकेला है ,उनके पास कोई इच्छा ही नहीं है उनको कुछ पता ही नहीं है जब तक ये इच्छा ही नहीं है तो सृष्टि की उत्पत्ति नहीं है ,तब तक वो अकेले है लेकिन जब उन्होंने इच्छा उत्पन्न की क्या इच्छा उत्पन्न कीया ? कि मैं एक हूं अनेक हो जाऊ ,तो ऐसा होने पर क्या हुआ ?

सृष्टि का विस्तार हुआ, ये सृष्टि बनी लेकिन अगर आदि नारायण ही नहीं है और उनकी इच्छा ही नहीं है तो ये सृष्टि ही नहीं ,

मैं यानी कि आदि नारायण और मेरी इच्छा क्या है ? एक घर

बनाने की इच्छा है तो घर बनाना क्या हो गया? मेरी सृष्टि हो गई मेरे लिए मेरा वो छोटा सा घर ही मेरी सृष्टि है बाकी क्या है उससे मुझे कोई लेना देना नहीं मेरा मैं और मेरा घर ही मेरी सृष्टि है उसी प्रकार ये नारायण आदि नारायण ही उनकी इच्छा ही उन की सृष्टि है तो आदि नारायण और उनकी इच्छा क्या है?

मैं एक हूं अनेक हो जाऊं ,

तो क्या हुआ आदि नारायण ने ऐसी इच्छा जब प्रकट करी तो क्या हुआ इच्छा शक्ति प्रकट हुई

कौन प्रकट हुआ **इच्छा शक्ति** अब इच्छा शक्ति क्या है ?इच्छा शक्ति ही उनकी प्रकृति है, आदि नारायण की मूल प्रकृति क्या है ?

उनकी इच्छा शक्ति और वो इच्छा शक्ति क्या है? मैं एक हूं अनेक हो जाऊ मैं **एकोहम बहुश्याम**, इसको हम एक चौपाई से भी सिद्ध करते हैं श्री जी प्राणनाथ जी ने इस चौपाई में क्या बताया,

ना ईश्वर ना मूल प्रकृति

अब ईश्वर किसे कहा गया ?आदि नारायण को ,नारायण कहे या ईश्वर कहे बात एक है

ना ईश्वर ना मूल प्रकृति ,ता दिन की कहु आपा बिति।

जब ईश्वर ही नहीं थे और ना उनकी मूल प्रकृति नही थी तब मैं उस दिन की बात बता रहा हूं ,

ना ईश्वर ना मूल प्रकृति जब आदि नारायण ही नहीं थे और उनकी मूल प्रकृति उनकी इच्छा शक्ति नहीं थी ता दीन की कहुं आपा बिति।

तब की वो बात कह रहे है वो उस परमधाम की बता रही है जहां पर रंग महल में,राजजी, श्यामा जी , सखिया विराजमान करते थे और क्या करते थे? आनंद की लीला करते थे,जब कुछ भी नहीं था ना ईश्वर था ना उनकी मूल प्रकृति एक मात्र परमधाम **में श्री राज जी निवास करते थे ता दीन की बात करते है ,**

प्रणव ब्रम में दो सक्ति बताए गए हैं , अप्रणव ब्रम और प्रणम ब्रम है, ये प्रणव शब्द ही अगर भागवत को भी देखो तो पांच शब्दों से बनता है ,सदा शिव , ईश्वर, ब्रह्मा ,विष्णु और ब्रह्मामेघ है ये पांच मिलकर के ही प्रणम ब्रम कहा जाता है, और इसकी जो शक्ति है वो **रोधिनी शक्ति** है

क्योंकि रोधिनी शक्ति ही मूल प्रकृति को पैदा करती है ,

जो रोधिनी शक्ति है , पहले वो मूल प्रकृति को पैदा करती है ,जो प्रणम ब्रम है वही (सप्न) सूपन में आकर के ओम आज भी कहा जाता की जितनी सृष्टि बनी है ये जो चौदलोक के अंदर शूर सब जा रहे हैं तो वहां पर भी **ओम** शब्द की आवाज आज भी आती है, ये ओम इसके पाच आकार बताए ओम ओ उ मा चंद्रमा और बिंदु मिला कर के जो ये पांच बताए है और क्या है पांच जो है मात्राए है ? शब्द ,रूप ,रस स्पर्श और गंध आकाश ,जल ,वायु अग्नि और प्रृथ्वी तो ये पांच तत्व है क्योंकि जैसे ही इन्होने पहले ओम में बताया जैसे ही आदि नारायण की उत्पति होती है, रोधिनी शक्ति जो है वो मोह तत्व को पैदा कर देती है , मोह तत्व क्या है ? मोह की निंद्रा का एक एक

ब्रहमांड एक परमाणु का मंडल जिसे हम परमाणु का एक मंडल बनाएंगे तो जैसे ही इसके अंदर आदि नारायण की मन की सुरता जो है वो प्रवेश करती है, तो वह बन जाते आदिनारायण वो क्या कहते हैं की
“ **एकोहं बहु स्याम** “मैं एक हूं बहुत हो जाऊ तो ही सृष्टि की रचना शुरू होती है , उसको मोह तत्व कहा गया
उसके बाद मोहतत्व बना उसमे पांच तन मात्राए बनी तीन गुण बने तीन गुण में मन बुद्धि और अहंकार की बात कर रहे पाच जो आवरण कहा जा रहा है पांच तत्व और तीन गुन, मन चित्त बुद्धि और अहंकार और इसी से ही सारे ब्रह्मांड की उत्पत्ति शुरू होती है ,
क्योंकि मोहतत्व बनता है और मोहतत्व से अहंकार बनता है, अकार से तन मात्राए बनती है ,तन मात्र के बाद में इंद्रिया बनती है , पाच तत्व की उत्पत्ति होती है और यह सारे ब्रहमांड बनने शुरू हो जाते है ,
एक प्रमाण सागर क्या है ? परमाणु का मंडल है परमाणुओं का मंडल बेशुमार ब्रहमांड बन जाता है, एक नहीं कह सकते बहुत से ब्रहमांड की उत्पति होती हैं ,
और इनके अंदर भी पांच तत्व की पाच मात्रा की तीन गुणों की उत्पति हो जाती है और ये ब्रहमांड के लोगों की एक आकाश गंगा पहले बनती है आकाश गंगा के अंदर कितने से ही सौरमंडल बनते है जैसे की हमारा एक सौरमंडल है ऐसे इस एक आकाश गंगा के अंदर कितने ही सौरमंडल है इस तरह से ये ब्रहमांड की उत्पति होती हैं,
वेदों का स्थान है पांच वेद , स्वसंम वेद भी दिखा देते हैं वास्तव में पांचवा जो वेद है वहां पर नहीं क्यों नहीं है ? मान लीजिए पांच वेद अगर कहा जाए तो पांचवा वेद अगर होता हमारी वाणी, सागर शिनगार, परिक्रमा सारी वाणी वहां पर हो जाते भेद तो पहले ही खुल जाते ये कोई रूप में तो वहा है नहीं वहा तो महाकारण के रूप में अंदर

वो जड़ नहीं है ,वो पूरी तरह से चेतन है ,जैसे अथर्व वेद, सामवेद यजुर्वेद ,ऋग्वेद है, चारों वेद है, हमारे तो **पांचवा वेद** कहा जाता है , वास्तव में पांचवा वेद वहा नहीं, कलयुग में आना था 28 कलयुग में आना लिखा हुआ था इसलिए वो पांचवा वेद अब आया,

और चिदानंद लहरी किसे कहा ? चार द्रिप का भी नाम है वहां पर, शुन्य की बात ,यही कहा जाता के यही सात सुन्य जहां पर ताल ,मर्दान, शेहनाई, गंध, मर्दान, विना, मुरली ,बादल गर्जना, स गर्जना ये 10 नाम हो जहां से पूरी तरह से आवाज आती है ,जहा पर लोग सुनते भी है , इसका जो अव्याकृत के अंदर है ,जब ये सुक्ष्म, स्थुल यहां आदिनारारायण का नीचे का ब्रहमांड बनता है, आदिनारायण के अंदर महा कारण, कारण और सुक्ष्म, स्थुल है तो उसके अंदर सात शुन्य का स्थान उसी का प्रति से आवाज निकलती है सभी कहते सा रे गा मा पा धी नी सा

शून्य के अंदर है, एक्चुअली उसका प्रतिबिंब है ,वैसे प्रतिबिंब के अंदर ही है शून्य, जो है सात शून्य और महा शून्य ऊपर मोहतत्व इन्ही को कहा

ताल ,मर्दन ,सेहनाई ,मुरली ,वीना बादल ,गर्जना ,सील गर्जना इस तरह से

वहां पर अ ानंद की आवाज सुनाई देती है , बहुत से राधा स्वामी मत वाले हैं ,जो कबीर मत वाले हैं ,वो सारे इन्हीं ही आवाजों को सुन कर के सोचते कि हमने परमात्मा का दर्शन कर लीया, आवाज को सुन कर के

बहुत खुश होते रहते ,

वास्तव में ये क्षर बमांङ अब तक ये नारायणी सृष्टि सात शून्य में वही स्वरों की उत्पत्ति होती है ,मुरली ,मृदंग और रंगों की उत्पत्ति होती है

जो अव्याकृत का उल्टा प्रतिबिंब पड़ता है
इस प्रतिबिंब तो प्रतिबिंब लेकिन अव्याकृत का उल्टा कैसे गुणों में उल्टा अब तक जो हम पढ़ रहे थे अक्षर ब्रम के सारे गुण थे
वो कैसे थे गुणों में कैसे उल्टा और कैसे ?

जैसे **मोह ,अज्ञान, भरम, काल, कर्म, शून्य ,नींद ,निर्गुण ,निरंजन**, ये सारे क्या है ये जो गुण है ये यहां के स्वानिक ब्रह्मांड के गुण है लेकिन यहां के गुण क्या है ये सारे क्या है सत ,चित, आनंद ,अनंत ,अद्वैत साकार जीवन और सुंदर अव्याकृत के सारे गुण क्या है? सत ,चित ,आनंदमय है आनंद से भरपूर है यहां आनंद ही आनंद है लेकिन इसमे भी तीन पाद कहे गए ,सबलिक ब्रम ,केवल ब्रम ,सबलिक ब्रम में आनंदमय हैं ,और अव्याकृत से सृष्टि का विस्तार हुआ,

तो अव्याकृत का प्रतिबिंब तो प्रतिबिंब लेकिन गुणों में उल्टा प्रतिबिंब , यहां के गुण क्या है यहां पर क्या है मोह भी है ,अज्ञान की नींद भी है ,भरम भी है, कर्म भी है ,काल भी है ,शून्य भी है ,और नींद भी है, निर्गुण भी है ,और निरंजन पर काम क्रोध मोह माया अहंकार सब चीजों का समष्ति करण है,

लेकिन ऊपर के पाद में ये सब चीज नहीं है ,वहा का हर स्वरूप हर चीज आनंदमय है, और अव्याकृत का उल्टा प्रतिबिंब नारायणी सृष्टि में क्षर पुरुष कि कैसे उनकी उत्पत्ति हुई और उनके अंदर 14 लोगों के ब्रह्मांड की उत्पत्ति कैसे हुई जब 14 लोगों की ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई तो साथ में क्या कया चीजें आई वो सब आगे की पीडीअफ मे होगा,

प्रस्न : अव्याकृत का महा कारण है तो वो सबलीक का स्थूल भी हुआ ?
जवाब : यस वही सबलीक का स्थूल है,

प्रश्न : ये जो अभी मोह तत्व से जो आदि नारायण उत्पन्नहुआ ये इनका स्थान क्षर ब्रह्मांड में है ?

जवाब : यस

प्रस्न : ये सात शून्य तो हम समझते हैं क्षर ब्रह्मांड से अष्टा आवण उसके बाद फिर सात शून्य आते है क्या ये वो सात शून्य है?

जवाब : यस

मतलब ये है कि उनका अखंड स्थान यहां पे है ,वैसे उनका प्रतिबिंब वो नीचे पड़ रहा है, अखंड हो गया नीचे अखंड वो इन्ही का प्रतिबिंब है जिस ब्रह्मांड में हम रह रहे हैं ,क्षर ब्रहमांड में ,

क्षर ब्रह्मांड से बाहर अष्टा आवण के ऊपर सात शून्य आते हैं ,ये सब कुछ नारायणी सृष्टि के अंदर ही आता है ,ये नारायणी सृष्टि वहां से शुरू हो जाती है निराकार से,

प्राणनाथ प्यारे की जय , सदगुरु महाराज की जय

प्रणाम जी